VOL. 1

SHIBLI NATIONAL ACADEMIC JOURNAL

A PEER-REVIEWED · MULTIDISCIPLINARY · MULTILINGUAL JOURNAL

ESTD. 2026

Knowledge Beyond Boundaries...

SHIBLI NATIONAL ACADEMIC JOURNAL

S N A J

Open Access · Online · Biannual · Double-Blind Peer Reviewed
Crossref Indexed DOI · Multidisciplinary · Multilingual

VOLUME 1 · ISSUE 1

JANUARY – JUNE 2026

CHIEF EDITOR

Dr. Mohammad Zahid

www.snaj.org.in

ISSUE 1

ISSN 3139-3284 (Online)

SHIBLI NATIONAL ACADEMIC JOURNAL
Volume 1 · Issue 1 · January – June 2026

FOREWORD

It is with immense pride and a deep sense of purpose that I present the inaugural issue of the Shibli National Academic Journal (SNAJ) to the global community of scholars, researchers, and students. Named in reverence to the towering legacy of Allama Shibli Nomani — a scholar whose intellectual contributions transcended boundaries of language, discipline, and geography — this journal aspires to carry forward that same spirit of rigorous, cross-cultural inquiry.

SNAJ was conceived from a simple but pressing conviction: that meaningful scholarship should not be confined by the language in which it is written, nor by the discipline from which it emerges. India's intellectual tradition has long thrived at the confluence of languages — English, Hindi, and Urdu among them — and it is this confluence that our journal seeks to honour. By welcoming original research across the humanities, social sciences, education, and emerging interdisciplinary , multilingual fields, we hope to build a genuinely inclusive platform for academic dialogue.

As Chief Editor, I have had the privilege of witnessing the dedication of our editorial board, reviewers, and contributors, whose collective commitment has shaped this first issue. Every article herein has passed through a rigorous double-blind peer review/ indexed process, and each is assigned a Crossref indexing, registered DOI, reflecting our unwavering commitment to academic integrity, originality, and permanence in the global research ecosystem.

I extend my heartfelt gratitude to our esteemed reviewers, editorial board members, and the scholars who entrusted us with their research. It is through their collective effort that this journal has moved from vision to reality. I also invite researchers, academicians, and students from across disciplines and linguistic traditions to consider SNAJ as a home for their scholarship in the issues to come.

It is my sincere hope that this journal will serve not merely as a repository of research, but as a living, evolving conversation — one that bridges languages, disciplines, and generations of scholars in pursuit of knowledge.

With warm regards,

Dr. Mohammad Zahid
Chief Editor
Shibli National Academic Journal (SNAJ)

Shibli National Academic Journal *ISSN- 3139 - 3284*
Vol. No. 1, Issue No. 1, Jan- Jun 2026
Received Date: 15/02/2026 Accepted Date: 11/04/2026 Publication Date: 30/06/2026 *DOI*

विद्यार्थियों के मध्य व्यावसायिक स्वावलंबन का विमर्श: आकांक्षा, जोखिम एवं पहचान निर्माण

Sarita Kumari[1], Sarfaraz Ahmad[2] & Pawak Agrawal[3]

सारांश

वर्तमान वैश्वीकरण और तीव्र तकनीकी प्रगति के युग में, उद्यमशीलता को न केवल रोजगार सृजन के मार्ग के रूप में, बल्कि समावेशी आर्थिक विकास के लिए एक अनिवार्य रणनीति के रूप में स्वीकार किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य ध्येय विद्यार्थियों के मध्य 'व्यावसायिक स्वावलंबन' की अवधारणा का गहन विश्लेषण करना है, जो आकांक्षा, जोखिम प्रबंधन और पहचान निर्माण के महत्वपूर्ण स्तंभों पर आधारित है। अकादमिक परिप्रेक्ष्य में, स्वावलंबन को व्यक्ति की उस आंतरिक क्षमता के रूप में परिभाषित किया गया है जिसके माध्यम से वह बाहरी सहायता पर निर्भर रहने के स्थान पर स्वयं के मौलिक विचारों, कौशल और आंतरिक क्षमताओं से एक स्वतंत्र एवं संधारणीय इकाई का निर्माण करता है। यह शोध पत्र इस तथ्य को रेखांकित करता है कि कोविड-19 महामारी के पश्चात उत्पन्न आर्थिक अनिश्चितता और 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान ने स्थानीय संसाधनों के रणनीतिक उपयोग तथा 'लोकल' को 'ग्लोबल' बनाने की आकांक्षा को बल दिया है। 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' (NEP 2020) के संदर्भ में, यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि व्यावसायिक शिक्षा का मुख्यधारा में एकीकरण छात्रों को 'रोजगार चाहने वालों' के स्थान पर 'रोजगार प्रदाता' के रूप में रूपांतरित करने के लिए एक क्रांतिकारी आधार प्रदान करता है। शोध के प्रमुख निष्कर्ष दर्शाते हैं कि स्वावलंबन की आकांक्षा का निर्माण केवल एक व्यक्तिगत निर्णय नहीं है, अपितु यह शिक्षा, व्यक्तिगत मनोविज्ञान, पारिवारिक पृष्ठभूमि और रोल मॉडल्स के बीच होने वाली निरंतर अंतःक्रिया का परिणाम है।

इसके अतिरिक्त यह अध्ययन विद्यार्थियों की पहचान निर्माण में स्वावलंबन के मनोवैज्ञानिक आयामों का विवेचन करता है, जो उन्हें 'सामाजिक दासता' से मुक्त कर मानवीय गरिमा, आत्म-सम्मान और आर्थिक स्वायत्तता प्रदान करता है। असफलता के प्रति दृष्टिकोण में सकारात्मक बदलाव और 'उद्यमशीलता लचीलापन' के विकास को शोध में एक निर्णायक घटक माना गया है, जो विद्यार्थियों को प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अडिग रहने की शक्ति देता है। यह शोध पत्र एक ऐसे सुदृढ़ सहायक पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण की वकालत करता है जहाँ शैक्षणिक संस्थान नवाचार, परामर्श और व्यावहारिक अनुभव आधारित शिक्षा को प्राथमिकता दें, ताकि विद्यार्थी राष्ट्र निर्माण में सकारात्मक परिवर्तन के वाहक के रूप में उभर सकें।

बीज शब्द: *व्यावसायिक स्वावलंबन, आकांक्षा, जोखिम प्रबंधन, पहचान निर्माण, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*

1. Research Fellow, Department of Teacher Education, Halim Muslim PG College affiliated to Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur Nagar, U.P., Bharat; E-mail- kumarisarita128@gmail.com

2. Associate Professor, Department of Teacher Education, Halim Muslim PG College affiliated to Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur Nagar, U.P., Bharat; E-mail- dr.sarfarazahmad1994@gmail.com

3. Senior Research Fellow, Department of Education, Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur Nagar, U.P., Bharat; E-mail- pawak_phd21_edu@csjmu.ac.in

प्रस्तावना

वर्तमान वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति के युग में, उद्यमशीलता को न केवल रोजगार सृजन और नवाचार के एक महत्वपूर्ण मार्ग के रूप में स्वीकार किया गया है, बल्कि इसे समावेशी आर्थिक विकास के लिए एक अनिवार्य रणनीति माना जा रहा है (Saptono et al., 2021)। अकादमिक दृष्टिकोण से, 'स्वावलंबन' की अवधारणा का मूल राल्फ वाल्डो इमर्सन के विचारों में निहित है, जिन्होंने इसे व्यक्ति के अपने कौशल, मौलिकता और आंतरिक क्षमताओं पर विश्वास के रूप में परिभाषित किया था (Alam et al., 2021)। आधुनिक संदर्भों में, व्यावसायिक स्वावलंबन व्यक्ति की वह योग्यता है जिसके माध्यम से वह बाहरी सहायता पर निर्भर रहने के स्थान पर स्वयं के प्रयासों से एक स्वतंत्र और संधारणीय इकाई का निर्माण करता है (Araoye et al., 2024)। कोविड-19 महामारी के पश्चात उत्पन्न आर्थिक अस्थिरता ने वैश्विक स्तर पर सुरक्षित जीवन और सतत विकास के सिद्धांतों पर पुनर्विचार करने के लिए विवश किया है, जिसके परिणामस्वरूप भारत जैसे विकासशील देशों में 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान के माध्यम से स्थानीय संसाधनों के रणनीतिक उपयोग और 'लोकल' को 'ग्लोबल' बनाने की आकांक्षा को बल मिला है।

शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका इस विमर्श में अत्यंत निर्णायक हो गई है क्योंकि पारंपरिक रोजगार बाजारों में औपचारिक अवसरों की सीमित उपलब्धता और स्नातकों के कौशल तथा बाजार की माँग के बीच बढ़ते अंतर ने एक गंभीर संकट पैदा कर दिया है (Odor, & Nwalado, 2026)। उद्यमशीलता शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि उनमें ऐसी व्यावहारिक सक्षमताएँ विकसित करना है जो उन्हें ' रोजगार चाहने वालों' के स्थान पर 'रोजगार प्रदाता' के रूप में स्थापित कर सकें। भारत की 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' (NEP 2020) इसी दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है, जो व्यावसायिक और अकादमिक धाराओं के बीच के स्पष्ट अलगाव को समाप्त कर एक समग्र और बहु-विषयक शिक्षा प्रणाली की वकालत करती है। यह नीति विद्यार्थियों को उनकी जन्मजात प्रतिभाओं को खोजने और जोखिम प्रबंधन की क्षमता विकसित करने के लिए एक अनुकूल वातावरण प्रदान करने पर बल देती है, जिससे अंततः उनके व्यक्तित्व में आत्मविश्वास और पेशेवर अनुशासन का समावेश हो सके (Government of India, 2020), हालांकि NEP 2020 व्यावसायिक स्वावलंबन को बढ़ावा तो देती है परंतु इसके प्रभावी कार्यान्वयन में विभिन्न स्तरों पर विलंब और प्रक्रियात्मक टालमटोल एक प्रमुख बाधा के रूप में उभरते हैं (Agrawal & Bhatt, 2023)।

व्यावसायिक स्वावलंबन केवल एक आर्थिक गतिविधि नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों की व्यक्तिगत पहचान के निर्माण और उनके आत्म-सम्मान से जुड़ा एक गहरा मनोवैज्ञानिक विमर्श है। आर्थिक विकास के साहित्य में, स्वावलंबन की क्षमता को सतत विकास के मूल मूल्यों के रूप में देखा जाता है, जो व्यक्ति को 'सामाजिक दासता' से मुक्त कर मानवीय गरिमा और स्वतंत्रता प्रदान करती है। जब विद्यार्थी जोखिम और अनिश्चितता के वातावरण में अपनी व्यावसायिक पहचान का निर्माण करते हैं, तो वे न केवल आर्थिक स्वायत्तता प्राप्त करते हैं, बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन के वाहक के रूप में भी उभरते हैं। अतः, यह शोध पत्र विद्यार्थियों के मध्य स्वावलंबन की आकांक्षा के निर्माण, जोखिम के प्रति उनके दृष्टिकोण और इस प्रक्रिया में उनकी पहचान के पुनर्निर्माण का गहन विश्लेषण करने का प्रयास करता है, ताकि शिक्षा और उद्यमिता के मध्य एक सुदृढ़ पारिस्थितिकी तंत्र विकसित किया जा सके।

आवश्यकता एवं महत्व

विद्यार्थियों के मध्य व्यावसायिक स्वावलंबन की आवश्यकता और महत्व वर्तमान वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में एक अनिवार्य विमर्श बन गया है। स्नातक बेरोजगारी का बढ़ता स्तर, विशेष रूप से भारत और नाइजीरिया जैसी

उभरती अर्थव्यवस्थाओं में, एक गंभीर सामाजिक-आर्थिक चुनौती के रूप में उभरा है। विश्वविद्यालयों द्वारा प्रदान किए जाने वाले सैद्धांतिक ज्ञान और नियोक्ताओं द्वारा माँगी जाने वाली व्यावहारिक सक्षमताओं के मध्य बढ़ता 'कौशल-बाजार बेमेल' इस स्वावलंबन की आवश्यकता को और अधिक पुष्ट करता है। औपचारिक रोजगार बाजारों की संतृप्ति ने स्नातकों को गरीबी, सामाजिक हताशा और पलायन के दबावों के प्रति संवेदनशील बना दिया है, जिससे स्वतंत्र आर्थिक पहल की ओर मुड़ना अब एक विकल्प नहीं बल्कि अपरिहार्यता बन गई है (Magasi, 2022)।

व्यावसायिक स्वावलंबन का महत्व केवल व्यक्तिगत आय सृजन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय आर्थिक संवृद्धि और समावेशी विकास का मुख्य चालक है। अकादमिक शोध यह रेखांकित करते हैं कि स्वावलंबन की प्रक्रिया विद्यार्थियों को 'नौकरी चाहने वालों' के स्थान पर 'नौकरी प्रदाता' के रूप में रूपांतरित करती है, जो एक गतिशील अर्थव्यवस्था में नए रोजगार पैदा करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। बिहार जैसे राज्यों के संदर्भ में, जहाँ निम्न औद्योगीकरण और उच्च जनसंख्या घनत्व जैसी संरचनात्मक बाधाएं मौजूद हैं, उद्यमशीलता कौशल अर्जित करना क्षेत्रीय आर्थिक लचीलेपन को सुदृढ़ करने और आजीविका की भेद्यता को कम करने का एक प्रभावी तंत्र सिद्ध होता है।

सतत विकास के दृष्टिकोण से, व्यावसायिक स्वावलंबन विद्यार्थियों को 'सामाजिक दासता' से मुक्त कर मानवीय गरिमा, आत्म-सम्मान और स्वतंत्रता प्रदान करता है (Edokpolor, 2020)। यह विद्यार्थियों को उनकी पूर्ण मानवीय क्षमता के उच्चतम स्तर, जिसे अब्राहम मैस्लो ने 'आत्म-वास्तविकीकरण' कहा है, तक पहुँचने के लिए एक ठोस आधार प्रदान करता है (Saibu et al., 2024)। जब विद्यार्थी नवाचार के माध्यम से समाज की समस्याओं का समाधान खोजते हैं, तो वे न केवल व्यक्तिगत समृद्धि प्राप्त करते हैं, बल्कि सामाजिक कल्याण और गरीबी उन्मूलन के व्यापक लक्ष्यों में भी योगदान देते हैं (Ahmadu et al., 2025) ।

भारत के 'आत्मनिर्भर भारत' विजन के अंतर्गत, व्यावसायिक स्वावलंबन का महत्व स्थानीय संसाधनों के रणनीतिक उपयोग और 'लोकल' को 'ग्लोबल' बनाने की क्षमता में निहित है (Alam et al., 2021)। यह विद्यार्थियों में वह मनोवैज्ञानिक लचीलापन और आत्मविश्वास विकसित करता है जो उन्हें भविष्य के अनिश्चित आर्थिक संकटों का सामना करने और प्रतिकूल परिस्थितियों से उबरने में सक्षम बनाता है। इस प्रकार, व्यावसायिक स्वावलंबन न केवल एक करियर मार्ग है, बल्कि यह एक सुदृढ़ राष्ट्र निर्माण और व्यक्तिगत पहचान के पुनर्निर्माण की आधारशिला है (NITI AAYOG, India, 2020)।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

लीवा-लीगो एवं अन्य (2024) के अनुसार 'उद्यमशीलता संबंधी सोच' को एक अनिवार्य सक्षमता माना गया है जो नेतृत्व और सामाजिक प्रभाव वाले रचनात्मक समाधानों को प्रोत्साहित करती है। विद्वानों का तर्क है कि उद्यमिता का वास्तविक सार केवल लाभार्जन नहीं, बल्कि समाज की जटिल समस्याओं का समाधान खोजना है। यह शोध 'शिक्षा 4.0' को एक सक्षमकर्ता के रूप में प्रस्तुत करता है, जो सतत विकास लक्ष्यों के माध्यम से विद्यार्थियों में अनुकूलनशीलता, रणनीतिक सोच और तकनीकी सक्षमता जैसे उप-कौशल विकसित करता है। हालांकि, साहित्य यह भी रेखांकित करता है कि वंचित और ग्रामीण समुदायों के विद्यार्थियों के पास उन्नत प्रशिक्षण प्रणालियों तक पहुँच का अभाव है, जिससे विकसित क्षेत्रों की तुलना में एक स्पष्ट 'शैक्षणिक अंतराल' उत्पन्न होता है। अतः किफायती और नवाचार-उन्मुख मॉडलों के माध्यम से इस अंतराल को कम करना 21वीं सदी की व्यावसायिक चुनौतियों के लिए आवश्यक है (Leiva-Lugo et al., 2024)।

ओडोर एवं न्वालाडो (2026) के साहित्य समीक्षा के आलोक में, व्यावसायिक स्वावलंबन को तकनीकी, उद्यमिता और व्यावसायिक कौशलों के एकीकरण के रूप में परिभाषित किया गया है जो विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने में सक्षम है। विद्यार्थियों की

औद्योगिक कार्य अनुभव योजना जैसे उपकरण कक्षा के सिद्धांतों और वास्तविक उद्योग प्रथाओं के बीच के अंतराल को पाटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह अध्ययन यह पुष्ट करता है कि व्यावहारिक प्रशिक्षण से समस्या-समाधान क्षमता और व्यावसायिक विचारों के सृजन में वृद्धि होती है, जो स्नातकों को 'नौकरी चाहने वालों' के स्थान पर 'नौकरी प्रदाता' के रूप में रूपांतरित करती है। यद्यपि साहित्य यह भी संकेत देता है कि अपर्याप्त वित्तपोषण, सीमित प्रशिक्षण अवधि और कमजोर परामर्श जैसी संरचनात्मक बाधाएं स्वावलंबन की प्रक्रिया को पूर्णतः प्रभावी बनाने में बाधक सिद्ध होती हैं (Odor & Nwalado, 2026)।

मैगासी (2022) के अकादमिक विमर्श में 'नियोजित व्यवहार के सिद्धांत' उद्यमशीलता की आकांक्षाओं को समझने का आधारभूत ढाँचा प्रदान करता है। व्यावसायिक स्वावलंबन की मंशा केवल पारंपरिक ज्ञान-आधारित शिक्षण से नहीं, बल्कि सक्षमता-आधारित प्रशिक्षण, व्यक्तिगत गुणों और सामाजिक समर्थन के समन्वय से निर्मित होती है। शोध यह रेखांकित करता है कि सृजनात्मकता, जोखिम लेने की प्रवृत्ति और 'आत्म-प्रभावकारिता' जैसे आंतरिक कारक, बाहरी सहायता तंत्र जैसे कि रोल मॉडल और सरकारी नीतियों के साथ मिलकर विद्यार्थियों को मनोवैज्ञानिक रूप से 'आत्म-नियोजन' के लिए तैयार करते हैं। अतः स्वावलंबन एक नियोजित व्यवहार है जो दीर्घकालिक योजना, अनुभव और सहायक पारिस्थितिकी तंत्र द्वारा संचालित होता है, जो छात्रों को रोजगार प्रदाताओं में रूपांतरित करता है (Magasi, 2022)।

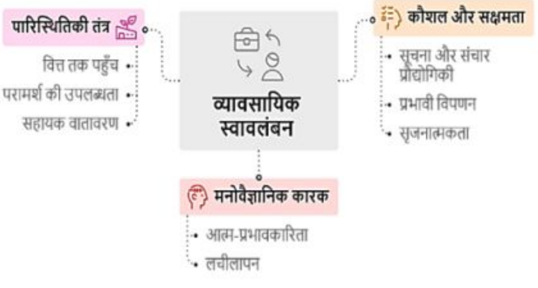

शोध प्रश्न

1. व्यावसायिक स्वावलंबन की अवधारणा क्या है?
2. विद्यार्थियों के मध्य व्यावसायिक स्वावलंबन की आकांक्षा किस प्रकार निर्मित होती है तथा इसके सामाजिक-सांस्कृतिक निर्धारक क्या हैं?
3. विद्यार्थियों की पहचान निर्माण में व्यावसायिक स्वावलंबन की क्या भूमिका होती है?
4. विद्यार्थी व्यावसायिक स्वावलंबन को एक करियर विकल्प के रूप में कैसे अर्थ देते हैं और यह अर्थ-निर्माण उनकी व्यक्तिगत एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि से किस प्रकार प्रभावित होता है?
5. व्यावसायिक स्वावलंबन के संदर्भ में असफलता के प्रति विद्यार्थियों की धारणा और उससे निपटने की रणनीतियाँ क्या हैं?

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक शोध दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों के मध्य व्यावसायिक स्वावलंबन की अवधारणा को आकांक्षा, जोखिम प्रबंधन एवं पहचान निर्माण के परिप्रेक्ष्य में गहराई से समझना है। अध्ययन में वर्णनात्मक एवं व्याख्यात्मक शोध अभिकल्प का उपयोग किया गया, जिसके अंतर्गत द्वितीयक स्रोतों—जैसे शोध लेखों, नीतिगत दस्तावेजों (विशेषतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020) तथा प्रासंगिक अकादमिक साहित्य का व्यवस्थित विश्लेषण किया गया है।

व्यावसायिक स्वावलंबन

व्यावसायिक स्वावलंबन एक ऐसी परिपक्व आर्थिक स्थिति और प्रक्रिया है, जिसमें एक उद्यमी या व्यक्ति अपनी स्वयं की क्षमताओं, संसाधनों एवं निर्णयों पर निर्भर रहकर एक स्वतंत्र व्यावसायिक इकाई का संचालन करने में सक्षम होता है (Araoye et al., 2024)।

अकादमिक दृष्टिकोण से, इसे 'आत्मनिर्भरता' के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो किसी व्यक्ति की वह योग्यता है जिसके माध्यम से वह बिना किसी बाहरी

आकृति 1. व्यावसायिक स्वावलंबन

सहायता के अपनी और समाज की आवश्यकताओं को गरिमापूर्ण और स्थायी तरीके से पूर्ण करता है (Araoye et al., 2024)। राल्फ वाल्डो इमर्सन के अनुसार, स्वावलंबन का मूल आधार अपने विचारों, मौलिकता एवं अपनी आंतरिक क्षमता पर पूर्ण विश्वास करना है (Alam et al., 2021)। व्यावसायिक संदर्भ में, यह केवल जीविकोपार्जन का साधन नहीं है, बल्कि एक गतिशील और नवाचार-उन्मुख प्रक्रिया है, जहाँ एक उद्यमी जोखिम और अनिश्चितता के वातावरण में संसाधनों को एकत्रित कर एक आर्थिक संगठन का निर्माण करता है।

व्यावसायिक स्वावलंबन की प्रभावशीलता मुख्य रूप से तीन स्तंभों पर टिकी है:

- **कौशल और सक्षमता:** इसमें सूचना और संचार प्रौद्योगिकी, प्रभावी विपणन और सृजनात्मकता जैसे व्यावहारिक कौशल शामिल हैं जो व्यवसाय को प्रतिस्पर्धी बनाते हैं (Araoye et al., 2024)।
- **मनोवैज्ञानिक कारक:** उद्यमशीलता 'आत्म-प्रभावकारिता' और लचीलापन अनिवार्य हैं, जो व्यक्ति को असफलताओं से उबरने और अनिश्चितता को प्रबंधित करने का आत्मविश्वास प्रदान करते हैं (Kumar et al., 2026)।
- **पारिस्थितिकी तंत्र:** व्यावसायिक स्वावलंबन के लिए एक सहायक वातावरण, वित्त तक पहुँच और परामर्श की उपलब्धता अत्यंत महत्वपूर्ण है (Kumar et al., 2026)।

भारत के 'आत्मनिर्भर भारत' दृष्टिकोण के अंतर्गत, व्यावसायिक स्वावलंबन का लक्ष्य देश को 'नौकरी चाहने वालों' के स्थान पर 'नौकरी देने वालों' का राष्ट्र बनाना है (NITI AAYOG, India, 2020)। यह अवधारणा व्यक्ति को उसकी मानवीय क्षमताओं के उच्चतम स्तर तक पहुँचने के लिए एक ठोस मंच प्रदान करती है, जिससे न केवल व्यक्तिगत आर्थिक स्वतंत्रता सुनिश्चित होती है, बल्कि राष्ट्रीय लचीलापन और संधारणीय विकास को भी बल मिलता है।

विद्यार्थियों के मध्य व्यावसायिक स्वावलंबन की आकांक्षा का निर्माण तथा सामाजिक-सांस्कृतिक निर्धारक विद्यार्थियों के मध्य व्यावसायिक स्वावलंबन की आकांक्षा का निर्माण केवल एक व्यक्तिगत आर्थिक निर्णय नहीं है, वरन यह एक जटिल प्रक्रिया है जो शिक्षा, व्यक्तिगत मनोविज्ञान और उनके सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के बीच होने वाली निरंतर अंतःक्रिया का परिणाम है (Kumar et al., 2026)। आकांक्षा निर्माण की प्रक्रिया में औपचारिक शिक्षा और उद्यमिता शिक्षा की भूमिका नींव के रूप में कार्य करती है। जहाँ औपचारिक शिक्षा संज्ञानात्मक विकास और व्यावसायिक जागरूकता पैदा करती है, वहीं कौशल-आधारित व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रत्यक्ष रूप से व्यावहारिक कौशल और उद्यमशीलता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में अधिक प्रभावशाली पाया गया है (Kumar et al., 2026)।

आकृति 2. व्यावसायिक स्वावलंबन की आकांक्षा

'नियोजित व्यवहार के सिद्धांत' के अनुसार, किसी छात्र की उद्यमशीलता की मंशा मुख्य रूप से तीन कारकों पर निर्भर करती है: व्यवसाय के प्रति उसका दृष्टिकोण, सामाजिक मानदंड और व्यवहार पर कथित नियंत्रण।

विद्यार्थियों में स्वावलंबन की आकांक्षा तब प्रबल होती है जब उनमें 'आत्म-प्रभावकारिता' का स्तर ऊँचा होता है। यह विश्वास कि वे अनिश्चितता का प्रबंधन कर सकते हैं और संसाधनों को सफलतापूर्वक जुटा सकते हैं, उन्हें जोखिम उठाने के लिए प्रेरित करता है। इसके अतिरिक्त, कक्षा के बाहर का शिक्षण वातावरण और सफल उद्यमियों के साथ संवाद छात्रों को वास्तविक व्यावसायिक चुनौतियों को समझने और उनमें अपनी पहचान खोजने में सहायता करते हैं।

सामाजिक-सांस्कृतिक निर्धारक

विद्यार्थियों की आकांक्षाओं को आकार देने में सामाजिक और सांस्कृतिक कारक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करते हैं:

- **पारिवारिक पृष्ठभूमि और भूमिका प्रतिमान:** परिवार व्यवसाय की आकांक्षा को आकार देने वाला सबसे महत्वपूर्ण निर्धारक है। जिन विद्यार्थियों के पास पारिवारिक व्यवसाय का अनुभव होता है या जिनके परिवार में सफल उद्यमी 'भूमिका प्रतिमान (रोल मॉडल)' के रूप में मौजूद होते हैं, उनमें व्यावसायिक पहचान अधिक स्पष्ट और सुदृढ़ होती है (Edokpolor, 2020)।
- **सामाजिक पूँजी:** मित्रों, सहकर्मियों और समुदाय द्वारा प्रदान किया गया नैतिक और भावनात्मक समर्थन उद्यमशीलता की 'कथित वांछनीयता' को बढ़ाता है। सामाजिक नेटवर्क न केवल आत्मविश्वास प्रदान करते हैं, बल्कि संसाधनों तक पहुँच और जोखिम साझा करने का मंच भी तैयार करते हैं (Edokpolor, 2020)।
- **सांस्कृतिक मूल्य और नैतिकता:** सांस्कृतिक परिवेश उद्यमशीलता के प्रति समाज के दृष्टिकोण को निर्धारित करता है। उदाहरण के लिए, कुछ सांस्कृतिक ढाँचों में व्यवसाय को केवल लाभार्जन नहीं, बल्कि एक 'नैतिक जिम्मेदारी' या 'सेवा' (जैसे विमर्श में व्यवसाय को 'इबादत' के रूप में देखना) के रूप में परिभाषित किया जाता है। इसके विपरीत, जिन समाजों में अनिश्चितता से बचने की प्रवृत्ति अधिक होती है, वहाँ जोखिम लेने की आकांक्षा कम हो सकती है (Conduah & Essiaw, 2022)।
- **लैंगिक बाधाएँ:** सामाजिक-सांस्कृतिक मानदंड अक्सर महिला विद्यार्थियों की स्वावलंबन की आकांक्षाओं को सीमित करते हैं। गतिशीलता की कमी, संसाधनों तक सीमित पहुँच और सामाजिक अपेक्षाएँ उनकी उद्यमशीलता की भागीदारी में बाधा बनती हैं (Kumar et al., 2026)।

विद्यार्थियों के मध्य व्यावसायिक स्वावलंबन की आकांक्षा का निर्माण एक सुदृढ़ पारिस्थितिकी तंत्र की माँग करता है, जहाँ शिक्षा न केवल ज्ञान प्रदान करे, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाओं को दूर करते हुए छात्रों की मनोवैज्ञानिक तत्परता को भी सुदृढ़ करे।

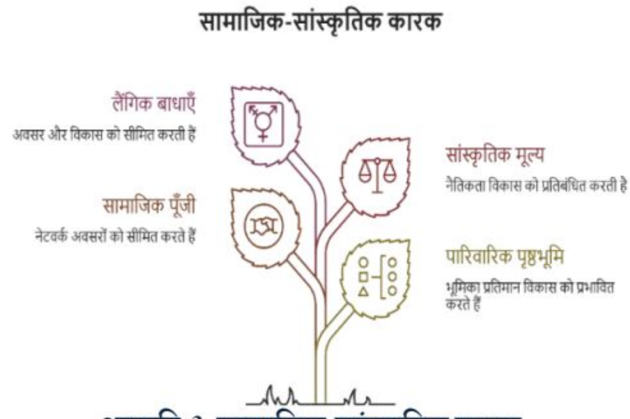

आकृति 3. सामाजिक-सांस्कृतिक कारक

विद्यार्थियों की पहचान निर्माण में व्यावसायिक स्वावलंबन की भूमिका

विद्यार्थियों के मध्य व्यावसायिक स्वावलंबन की आकांक्षा का उदय एक जटिल मनोवैज्ञानिक और शैक्षणिक प्रक्रिया है, जो उनकी व्यक्तिगत पहचान के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। 'नियोजित व्यवहार के सिद्धांत' के अनुसार, उद्यमशीलता की मंशा मुख्य रूप से तीन कारकों पर टिकी होती है: व्यवसाय के प्रति व्यक्तिगत दृष्टिकोण, सामाजिक मानदंड और कथित व्यवहारिक नियंत्रण या 'आत्म-प्रभावकारिता'। स्वावलंबन का मूल

अर्थ केवल जीविकोपार्जन का साधन जुटाना नहीं है, बल्कि अपनी आंतरिक क्षमताओं, मौलिक विचारों और निर्णयों पर पूर्ण विश्वास करना है (Alam et al., 2021)। अकादमिक शोध यह स्पष्ट करते हैं कि विद्यार्थियों में व्यवसाय शुरू करने की आकांक्षा तब प्रबल होती है जब उनमें अनिश्चितता के प्रबंधन और संसाधनों को सफलतापूर्वक जुटाने का आत्मविश्वास विकसित होता है, जो अंततः उनकी व्यावसायिक पहचान को सुदृढ़ करता है। आकांक्षा निर्माण की इस प्रक्रिया में औपचारिक शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रणालियाँ आधारभूत उत्प्रेरक की भूमिका निभाती हैं। जहाँ औपचारिक शिक्षा उद्यमशीलता के प्रति जागरूकता पैदा करती है और संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देती है, वहीं कौशल-आधारित व्यावसायिक प्रशिक्षण व्यावहारिक कौशल अर्जन और 'व्यवसाय प्रारंभ करने की तत्परता' पर अधिक गहरा प्रभाव डालते हैं। भारत की 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' के विजन के अनुरूप, व्यावसायिक शिक्षा का मुख्यधारा में एकीकरण छात्रों को 'नौकरी चाहने वालों' के स्थान पर 'नौकरी प्रदाता' के रूप में अपनी पहचान खोजने के लिए प्रेरित करता है (Government of India, 2020)। कक्षा के बाहर का शिक्षण वातावरण और औद्योगिक अनुभव (जैसे SIWES या इंटर्नशिप) विद्यार्थियों को वास्तविक व्यावसायिक चुनौतियों से जोड़कर उनमें स्वावलंबन की पहचान विकसित करते हैं (Odor & Nwalado, 2026)। स्वावलंबन की आकांक्षा को आकार देने में सामाजिक-सांस्कृतिक निर्धारक एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करते हैं। पारिवारिक पृष्ठभूमि इस दिशा में प्राथमिक निर्धारक है; जिन विद्यार्थियों के पास पारिवारिक व्यवसाय का अनुभव होता है या जिनके परिवार में सफल उद्यमी 'रोल मॉडल' के रूप में मौजूद होते हैं, उनमें व्यावसायिक पहचान अधिक स्पष्ट और सुदृढ़ होती है (Conduah & Essiaw, 2022)। इसके अतिरिक्त, सामाजिक पूँजी, जिसमें मित्र, सहकर्मी और धार्मिक या स्थानीय समुदाय शामिल हैं, छात्रों को आवश्यक भावनात्मक और नैतिक समर्थन प्रदान कर उद्यमशीलता की 'कथित वांछनीयता' को बढ़ाती है (Edokpolor, 2020)। सांस्कृतिक मूल्य भी जोखिम लेने की प्रवृत्ति और व्यावसायिक नैतिकता को प्रभावित करते हैं; उदाहरण के लिए, कुछ सांस्कृतिक परिवेशों में व्यवसाय को केवल लाभार्जन नहीं बल्कि 'सेवा' या 'इबादत' के रूप में देखा जाता है, जो विद्यार्थियों में स्वावलंबन के प्रति एक नैतिक प्रतिबद्धता विकसित करता है।

विद्यार्थियों के मध्य व्यावसायिक स्वावलंबन की आकांक्षा का निर्माण शिक्षा, मनोवैज्ञानिक तत्परता और अनुकूल सामाजिक-सांस्कृतिक पारिस्थितिकी तंत्र के समन्वय का परिणाम है। हालांकि, सामाजिक-सांस्कृतिक मानदंड और लैंगिक बाधाएँ अक्सर महिला विद्यार्थियों की स्वावलंबन की आकांक्षाओं को सीमित करती हैं, जिन्हें सामूहिक मंचों और सहायक नीतियों के माध्यम से ही संतुलित किया जा सकता है (Kumar et al., 2026)। जब एक विद्यार्थी स्वावलंबन की प्रक्रिया के माध्यम से अपनी पहचान का निर्माण करता है, तो वह न केवल व्यक्तिगत आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करता है, बल्कि मानवीय क्षमताओं के उच्चतम स्तर तक पहुँचकर समाज और राष्ट्र की स्थिरता में भी योगदान देता है (Edokpolor, 2020)।

व्यावसायिक स्वावलंबन: एक करियर विकल्प

विद्यार्थियों के लिए व्यावसायिक स्वावलंबन अब केवल जीविकोपार्जन का एक वैकल्पिक मार्ग नहीं, बल्कि आत्म-वास्तविकीकरण और आर्थिक स्वतंत्रता का एक सशक्त करियर विकल्प बन चुका है। पारंपरिक रोजगार बाजारों में औपचारिक अवसरों की सीमित उपलब्धता के कारण, उद्यमशीलता को रोजगार सृजन, नवाचार और समावेशी विकास के लिए एक महत्वपूर्ण पथ के रूप में मान्यता मिल रही है (Kumar et al., 2026)। अकादमिक दृष्टिकोण से, यह करियर विकल्प 'जॉब सीकर' के व्यक्तित्व को 'जॉब क्रिएटर' में परिवर्तित करने की क्षमता रखता है, जो एक गतिशील और प्रतिस्पर्धी अर्थव्यवस्था में न केवल व्यक्तिगत उन्नति बल्कि राष्ट्रीय आर्थिक लचीलेपन को भी बढ़ावा देता है।

एक सफल करियर के रूप में स्वावलंबन को अपनाने के लिए विशिष्ट व्यावसायिक सक्षमताओं का

अर्जन अनिवार्य है। इनमें सूचना और संचार प्रौद्योगिकी, प्रभावी विपणन, नेतृत्व और सृजनात्मकता जैसे व्यावहारिक कौशल शामिल हैं, जो एक स्वतंत्र व्यावसायिक इकाई के संधारणीय संचालन के लिए आधारभूत स्तंभ हैं (Kumar et al., 2026)। शोध यह दर्शाते हैं कि व्यावसायिक शिक्षा केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसे निर्णय लेने की क्षमता और संसाधनों के अनुकूलन के प्रति एक पेशेवर अनुशासन विकसित करना चाहिए। इसके अतिरिक्त, औद्योगिक कार्य अनुभव योजनाएं (जैसे SIWES या इंटर्नशिप) छात्रों को वास्तविक कार्य-संस्कृति और व्यावसायिक चुनौतियों से जोड़कर उनकी उद्यमशीलता संबंधी तत्परता को सुदृढ़ करती हैं (Conduah & Essiaw, 2022)। आधुनिक करियर विमर्श में व्यावसायिक स्वावलंबन का एक महत्वपूर्ण आयाम 'सतत उद्यमशीलता' है। आज के विद्यार्थी ऐसे करियर की आकांक्षा रखते हैं जो लाभार्जन के साथ-साथ पर्यावरणीय और सामाजिक चुनौतियों का समाधान भी प्रस्तुत करे। उद्यमशीलता को केवल वित्तीय क्रिया के स्थान पर 'सेवा' या 'नैतिक जिम्मेदारी' के रूप में देखना छात्रों में सामाजिक उत्तरदायित्व और चरित्र निर्माण की भावना को जागृत करता है। यह नैतिक दृष्टिकोण स्वावलंबन को एक गरिमापूर्ण करियर के रूप में स्थापित करता है, जहाँ व्यक्ति समाज की जटिल समस्याओं का नवाचार के माध्यम से समाधान खोजकर अपनी एक विशिष्ट पहचान निर्मित करता है (Leiva-Lugo et al., 2024)।

करियर के रूप में स्वावलंबन की व्यवहार्यता उद्यमशीलता लचीलेपन और सहायक पारिस्थितिकी तंत्र पर निर्भर करती है। आर्थिक अस्थिरता और अनिश्चितताओं के वातावरण में, असफलताओं से उबरने की मनोवैज्ञानिक क्षमता और मानसिक तत्परता एक उद्यमी के करियर को स्थायित्व प्रदान करती है (Okon et al., 2025)। 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' जैसे प्रगतिशील नीतिगत ढाँचे व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण और नवाचार केंद्रों के माध्यम से छात्रों को स्वतंत्र आर्थिक पहल करने के लिए एक अनुकूल वातावरण प्रदान कर रहे हैं (Government of India, 2020)। अतः व्यावसायिक स्वावलंबन एक ऐसा भविष्योन्मुखी करियर विकल्प है जो व्यक्तिगत आर्थिक स्वायत्तता सुनिश्चित करने के साथ-साथ सामाजिक-आर्थिक सशक्तीकरण का सशक्त माध्यम सिद्ध होता है।

व्यावसायिक स्वावलंबन पर व्यक्तिगत एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि का प्रभाव

विद्यार्थियों के मध्य व्यावसायिक स्वावलंबन की प्रक्रिया में व्यक्तिगत और पारिवारिक पृष्ठभूमि के प्रभाव का विश्लेषण करना अनिवार्य है, क्योंकि यह न केवल एक आर्थिक विकल्प है, बल्कि व्यक्तिगत पहचान और सामाजिक संरचना के अंतर्संबंधों का परिणाम है। अकादमिक शोध के अनुसार, स्वावलंबन की इस यात्रा में 'व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक पूँजी' एक आधारभूत निर्धारक के रूप में कार्य करती है। इसमें विद्यार्थियों की 'आत्म-प्रभावकारिता' और 'उद्यमशीलता लचीलापन'' सबसे महत्वपूर्ण हैं, जो उन्हें जोखिम उठाने और अनिश्चितता का प्रबंधन करने का आंतरिक विश्वास प्रदान करते हैं। जहाँ औपचारिक शिक्षा संज्ञानात्मक विकास और व्यावसायिक जागरूकता सुनिश्चित करती है, वहीं व्यक्तिग'त गुण जैसे उपलब्धि की प्रेरणा और अस्पष्टता के प्रति सहनशीलता विद्यार्थियों को स्वतंत्र व्यावसायिक पहल करने के लिए मानसिक रूप से तैयार करते हैं (Kumar et al., 2026)।

स्वावलंबन की आकांक्षा को आकार देने में पारिवारिक पृष्ठभूमि एक प्राथमिक उत्प्रेरक की भूमिका निभाती है। जिन विद्यार्थियों के परिवारों में उद्यमशीलता का परिवेश होता है या जिनके माता-पिता स्वयं व्यवसायी होते हैं, उनमें व्यावसायिक पहचान निर्माण की प्रक्रिया अधिक सुगम और सुदृढ़ होती है (Conduah & Essiaw, 2022)। 'पारिवारिक सामाजिक पूँजी' न केवल वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराती है, बल्कि भावनात्मक और नैतिक समर्थन के माध्यम से व्यवसाय की 'कथित वांछनीयता' को भी बढ़ाती है (Edokpolor, 2020)। पारिवारिक भूमिका प्रतिमान विद्यार्थियों में असफलता के

डर को कम करते हैं और उन्हें वास्तविक व्यावसायिक चुनौतियों से निपटने के लिए व्यावहारिक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं, जो किसी भी औपचारिक पाठ्यक्रम की तुलना में अधिक प्रभावशाली सिद्ध होता है (Conduah & Essiaw, 2022)।

व्यक्तिगत और पारिवारिक पृष्ठभूमि का यह प्रभाव जनसांख्यिकीय कारकों, जैसे आयु और अनुभव द्वारा और अधिक परिष्कृत होता है। शोध दर्शाते हैं कि जिन विद्यार्थियों को कम आयु में ही व्यावसायिक परिवेश का अनुभव प्राप्त होता है, उनकी स्वावलंबन के प्रति मंशा अधिक स्पष्ट होती है (Magasi, 2022)। हालाँकि, लैंगिक पृष्ठभूमि के संदर्भ में सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाएँ आज भी एक चुनौती बनी हुई हैं। महिला विद्यार्थियों के मामले में पारिवारिक मानदंड और सीमित गतिशीलता अक्सर उनकी स्वावलंबन की आकांक्षाओं को बाधित करते हैं, जहाँ उन्हें व्यक्तिगत सक्षमता के साथ-साथ सामाजिक अपेक्षाओं के मध्य संतुलन बनाना पड़ता है।

अतः हम कह सकते हैं कि विद्यार्थियों में व्यावसायिक स्वावलंबन का निर्माण उनकी व्यक्तिगत आंतरिक क्षमताओं और उनके पारिवारिक सहयोग तंत्र के मध्य होने वाली एक निरंतर अंतःक्रिया है। जहाँ व्यक्तिगत गुण उन्हें आधुनिक बाजार की चुनौतियों (जैसे डिजिटल सक्षमता और नवाचार) के अनुकूल बनाते हैं, वहीं पारिवारिक पृष्ठभूमि उन्हें जोखिम लेने के लिए आवश्यक सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती है (Government of India, 2020)। यह समन्वय न केवल उन्हें 'नौकरी चाहने वालों' के स्थान पर 'नौकरी प्रदाता' बनने के लिए प्रेरित करता है, बल्कि उन्हें समाज में एक स्वतंत्र और गरिमापूर्ण पहचान भी प्रदान करता है।

व्यावसायिक स्वावलंबन के संदर्भ में असफलता के प्रति विद्यार्थियों की धारणा एवं रणनीतियाँ

विद्यार्थियों के मध्य व्यावसायिक स्वावलंबन के विमर्श में 'असफलता' एक अनिवार्य और निर्णायक घटक है। अकादमिक दृष्टिकोण से, असफलता के प्रति विद्यार्थियों की धारणा केवल एक आर्थिक परिणाम नहीं, बल्कि उनके मनोवैज्ञानिक लचीलेपन और आत्म-बोध की परीक्षा है। ऐतिहासिक रूप से, असफलता को एक 'नकारात्मक परिदृश्य' या 'कमी' के रूप में देखा जाता था, किंतु आधुनिक सकारात्मक मनोविज्ञान ने इसे 'शक्ति मॉडल' की ओर स्थानांतरित कर दिया है, जहाँ इसे व्यक्तिगत विकास और चरित्र निर्माण के अवसर के रूप में परिभाषित किया जाता है (Conduah & Essiaw, 2022)। विद्यार्थियों में असफलता का भय अक्सर व्यावसायिक पहल करने में सबसे बड़ी बाधा बनता है, किंतु शोध यह दर्शाते हैं कि 'उद्यमशीलता आत्म-प्रभावकारिता' का उच्च स्तर इस भय को कम करने में सहायक सिद्ध होता है (Ahmadu et al., 2025)। जो विद्यार्थी अनिश्चितता के प्रबंधन और संसाधनों के अनुकूलन में स्वयं को सक्षम मानते हैं, वे असफलता को एक 'सीखने की प्रक्रिया' के रूप में स्वीकार करते हैं। असफलता से निपटने के लिए विद्यार्थी मुख्य रूप से 'उद्यमशीलता लचीलापन' की रणनीति अपनाते हैं। यह लचीलापन विद्यार्थियों को प्रतिकूल परिस्थितियों से उबरने और अनिश्चितता के वातावरण में टिके रहने की आंतरिक शक्ति प्रदान करता है। यह लचीलापन एक 'बफर' के रूप में कार्य करता है जो पर्यावरणीय तनावों के प्रभाव को सीमित करता है (Okon et al., 2025) । शोध यह रेखांकित करते हैं कि असफल व्यावसायिक प्रयासों के पश्चात विद्यार्थी एक मनोवैज्ञानिक श्रृंखला से गुजरते हैं, जिसमें दुःख, अनुकूलन और अंततः अधिगम शामिल होता है। इस प्रक्रिया में, विद्यार्थी अपनी रणनीतियों को संशोधित करते हैं और

आकृति 4. व्यावसायिक स्वावलंबन की ओर यात्रा

भविष्य की चुनौतियों के लिए स्वयं को अधिक 'तैयार' महसूस करते हैं (Conduah & Essiaw, 2022)।

रणनीतिक स्तर पर, विद्यार्थी खतरों की प्रकृति के अनुसार अपनी क्षमताओं का उपयोग करते हैं। सामान्य और बार-बार आने वाली बाधाओं के लिए वे 'नियमित-आधारित प्रतिक्रिया' का उपयोग करते हैं, जबकि जटिल और अपरिचित चुनौतियों के लिए 'ह्यूरिस्टिक-आधारित' क्षमताओं पर निर्भर रहते हैं। इसके अतिरिक्त, 'सामाजिक पूँजी', जिसमें मित्र, परिवार और सामुदायिक नेटवर्क शामिल हैं, एक महत्वपूर्ण सुरक्षा तंत्र के रूप में कार्य करती है। यह नेटवर्क न केवल संसाधनों तक पहुँच सुनिश्चित करता है, बल्कि जोखिम साझा करने और भावनात्मक समर्थन प्रदान कर असफलता के प्रभाव को कम करने में भी सहायक होता है (Edokpolor, 2020)।

व्यावसायिक स्वावलंबन के मार्ग में असफलता के प्रति धारणा को बदलने के लिए शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका अपरिहार्य है। विश्वविद्यालयों को केवल तकनीकी ज्ञान तक सीमित न रहकर 'असफलता अनुकरण अभ्यास' और अनुभवी उद्यमियों के साथ परामर्श जैसी रणनीतियों को पाठ्यक्रम में एकीकृत करना चाहिए (Okon et al., 2025)। यह अनुभवात्मक शिक्षण विद्यार्थियों में भावनात्मक दृढ़ता और 'अनुकूलन क्षमता' विकसित करेगा, जिससे वे असफलता को करियर के अंत के स्थान पर आत्म-वास्तविकीकरण की दिशा में एक आवश्यक कदम के रूप में देख सकेंगे।

निष्कर्ष

यह शोध पत्र स्पष्ट करता है कि व्यावसायिक स्वावलंबन वर्तमान वैश्विक आर्थिक अस्थिरता और तकनीकी प्रगति के युग में विद्यार्थियों के लिए मात्र एक वैकल्पिक करियर मार्ग नहीं, बल्कि एक अनिवार्य आवश्यकता बन गया है। यह प्रक्रिया छात्रों को पारंपरिक 'नौकरी चाहने वालों' की मानसिकता से मुक्त कर 'रोजगार प्रदाता' के रूप में रूपांतरित करने की क्षमता रखती है, जो 'आत्मनिर्भर भारत' और समावेशी विकास के राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है। शोध के प्रमुख निष्कर्ष दर्शाते हैं कि स्वावलंबन की आकांक्षा का निर्माण शिक्षा, व्यक्तिगत मनोविज्ञान और सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के बीच होने वाली एक निरंतर और जटिल अंतःक्रिया का परिणाम है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) इस संदर्भ में एक क्रांतिकारी आधार प्रदान करती है, जो व्यावसायिक प्रशिक्षण को मुख्यधारा की शिक्षा के साथ एकीकृत कर विद्यार्थियों में 'आत्म-प्रभाकारिता' और जोखिम प्रबंधन जैसे गुणों को विकसित करने पर बल देती है। इसके अतिरिक्त, पहचान निर्माण के मनोवैज्ञानिक आयामों पर विचार करने पर यह स्पष्ट होता है कि व्यावसायिक स्वावलंबन विद्यार्थियों को 'सामाजिक दासता' से मुक्त कर उन्हें मानवीय गरिमा, स्वतंत्रता और आत्म-सम्मान प्रदान करता है। शोध यह भी रेखांकित करता है कि असफलता के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव लाना आवश्यक है; इसे करियर के अंत के रूप में नहीं, बल्कि 'आत्म-वास्तविकीकरण' की दिशा में एक सीखने वाली प्रक्रिया और लचीलेपन के विकास के अवसर के रूप में देखा जाना चाहिए।

अंत में यह कहा जा सकता है कि यद्यपि पारिवारिक पृष्ठभूमि और सामाजिक पूंजी स्वावलंबन की यात्रा में उत्प्रेरक का कार्य करते हैं, तथापि लैंगिक बाधाओं और संसाधन अंतराल जैसी संरचनात्मक चुनौतियों को दूर करने के लिए एक सुदृढ़ और सहायक पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण अनिवार्य है। शैक्षणिक संस्थानों को अपनी भूमिका का विस्तार करते हुए नवाचार, परामर्श और व्यावहारिक अनुभव आधारित शिक्षा को प्राथमिकता देनी चाहिए, ताकि विद्यार्थी न केवल व्यक्तिगत आर्थिक स्वायत्तता प्राप्त कर सकें, बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन के वाहक के रूप में भी उभरें।

संदर्भ सूची

Agarwal, P. M. K., Priya, D. & Kapoor, D.N. (2022). Entrepreneurship and a Self-Reliant India: The Road Ahead. Iterative International Publishers. ISBN: 978-81-960738-1-7.

https://www.researchgate.net/publication/371206049_Entrepreneurship_and_a_Self-reliant_India

Agrawal, P. & Bhatt, T. (2023). Procrastination in implementation of NEP 2020. International Journal of Novel Research and Development (IJNRD), 8(5), i336–i342. https://www.ijnrd.org/papers/IJNRD2305844.pdf

Alam, A., Khan, A., Ghosal, N., & Satpati, L. (2021). A review of resource management and self-reliance for sustainable development of India under COVID -19 scenario. *Journal of Public Affairs*, *21*(4), e2725. https://doi.org/10.1002/pa.2725

Araoye, A., Adeleke, A.F., Megbuwawon, A.F. & Ayoola, Y.O. (2024). Digital Entrepreneurial Skills: A Tool to Equip and Promote Self-Reliance Among Students in Colleges of Education, Oyo State, Nigeria. International Journal of Entrepreneurship, Technology and Innovation (IJETI), 1(1), 235-250. https://ijeti.uniben.edu/wp-content/uploads/2024/08/INTERNATIONAL-JOURNAL-OF-ENTREPRENEURSHIP-IJETI-VOL.1-NO.1-JUNE-2024_060227-255-274-1.pdf

Conduah, A. K., & Essiaw, M. N. (2022). Resilience and entrepreneurship: A systematic review. *F1000Research*, *11*, 348. https://doi.org/10.12688/f1000research.75473.1Ahmadu, I., Abdulmalik, S.Y., & Isah, A.B. (2025). Entrepreneurship Education for Self-Reliance: A Study of Library and Information Science Graduates in Kano State. Information Impact: Journal of Information and Knowledge Management, 16(1), 24–35. https://doi.org/10.4314/iijikm.v16i1.3

Edokpolor, J. E. (2020). Entrepreneurship education and sustainable development: Mediating role of entrepreneurial skills. *Asia Pacific Journal of Innovation and Entrepreneurship*, *14*(3), 329–339. https://doi.org/10.1108/APJIE-03-2020-0036

Government of India. (2020). *National Education Policy 2020* (NEP 2020, pp. 1–66) [Education Policy]. Ministry of Human Resource Development. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

Grudens-Schuck, N., Allen, W., Hargrove, T.M. & Kilvington, M. (2003). Renovating dependency and self-reliance for participatory sustainable development. *Agriculture and Human Values*, 20, 53–64. https://doi.org/10.1023/A:1022412623083

Kumar, R.B., Raju, D.R.K. & Singh, P.K. (2026). The Role of Education and Training in Developing Entrepreneurial Skills: Empirical Evidence from Vaishali District, Bihar. International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR), 8(1), 1-7. https://doi.org/10.36948/ijfmr.2026.v08i01.66476

Leiva-Lugo, L., Álvarez-Icaza, I., López-Hernández, F.J. and Miranda, J. (2024). Entrepreneurial thinking and Education 4.0 in communities with development gaps: an approach through the Sustainable Development Goals. *Frontiers in Education*, 9:1377709. doi: 10.3389/feduc.2024.1377709

Magasi, C. (2022). The influence of entrepreneurship education on entrepreneurial intentions: Perception of higher business education graduates. *International Journal of Research in Business and Social Science (2147- 4478)*, *11*(2), 371–380. https://doi.org/10.20525/ijrbs.v11i2.1701

Majid, N. A., Zainol, F. A., Afthanorhan, A., Yusoff, A. S. M., Rahim, B. H. A., Ismail, N. A., Zakaria, R., Arifin, R. M., Adnan, W. I. W., Jaafar, F. W., Wahab, N. A., & Rahman, N. A. A. (2020). What Triggers Entrepreneurial Intention among Young Generation? The Impact of Social Media. *Journal of Physics: Conference Series*, *1529*(4), 042066. https://doi.org/10.1088/1742-6596/1529/4/042066

NITI AAYOG, India. (2020). *Powering Aatmanirbhar Bharat through Innovation and Entrepreneurship*. https://niti.gov.in/

powering-aatmanirbhar-bharat-through-innovation-and-entrepreneurship

Odor, I.L. & Nwalado, S.H. (2026). Vocational Education for Self-Reliance for University Undergraduates Using Students' Industrial Work Experience Scheme as Instrument. International Journal of Education Effectiveness Research, 10(8), 65-75. https://doi.org/10.70382/hijeer.v010i8.042

Okon, E. E., Udo, U. E., Ekpor, J. J., Michael, V. E., Bassey, I. N., Tong, E. J., Njong, N. C., Patrick, G. N., Ozokwelu, B. E., Njan, G. O., & Okoh, T. J. (2025). *Entrepreneurship Competencies and Self Reliance Motive Among Business Education Undergraduates in Public Universities in Cross River State*. In Review. https://doi.org/10.21203/rs.3.rs-7684306/v1

Saibu, S.O, Ogunmade, T.O., Oginni, A.M. & Olude, A.S. (2024). Exploring Students' Perceptions on Integration of Entrepreneurial-Motivated-Approach in Contextual Teaching and Learning of Senior Secondary Chemistry: A Note for Education Stakeholders. International Journal of Educational Perspectives, 12(1), 1-13. https://educationalperspectives.org.ng/upload_file/111%20Saibu%20et%20al%202024.pdf

Saptono, A., Wibowo, A., Widyastuti, U., Narmaditya, B. S., & Yanto, H. (2021). Entrepreneurial self-efficacy among elementary students: The role of entrepreneurship education. *Heliyon*, *7*(9), e07995.https://doi.org/10.1016/j.heliyon.2021.e07995

ISSN 3139-3284 (ONLINE)

ABOUT

SHIBLI NATIONAL ACADEMIC JOURNAL

Knowledge Beyond Boundaries...

ABOUT THE JOURNAL

The Shibli National Academic Journal (SNAJ) is an international, multidisciplinary and multilingual research publication dedicated to advancing rigorous scholarship across the humanities, social sciences, education, language and emerging interdisciplinary fields. Published biannually in fully open access online format, SNAJ upholds a double-blind peer review process to ensure the highest standards of academic integrity, originality and scholarly merit. Every article published in the journal is assigned a Crossref-registered Digital Object Identifier (DOI), ensuring permanent discoverability and citation traceability in the global research ecosystem.

AIMS & SCOPE

SNAJ welcomes original research articles, review papers, case studies and scholarly notes in English, Hindi and Urdu, fostering cross-linguistic and cross-cultural academic dialogue while maintaining internationally recognised standards of research publishing.

ISSN 3139-3284 (Online) · Crossref DOI Indexed

chiefeditor@snaj.org.in

www.snaj.org.in

© SNAJ PUBLICATIONS — ALL RIGHTS RESERVED